बी०ए० III

द्वितीय प्रश्न-पत्र

प्रश्न- हिन्दी भाषा के उद्भव एवं विकास पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

उत्तर-

हिन्दी का मूल प्राचीन आर्य भाषा वैदिक संस्कृत से प्रस्फुटित होकर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश तक प्रवाहित रहा। 1000 ई० के आसपास अन्य भारतीय आर्य भाषाओं की तरह हिन्दी का अलग स्वरूप भी निर्मित होने लगा। आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा के आरम्भिक काल से लेकर आजतक का इतिहास एक हजार वर्ष पुराना हो गया है। हिन्दी भाषा के 1000 वर्षों के इतिहास में डिंगल, पिंगल, हिन्दवी, ब्रजभाषा, अवधी, खड़ीबोली आदि बोलियाँ साहित्यिक स्तर पर पहुँच कर सम्पूर्ण हिन्दी प्रदेश में व्यापक प्रतिष्ठा तथा लोकप्रियता प्राप्त करती रहीं। हिन्दी भाषा के इस विकास काल को तीन भागों में बाँटा जा सकता है —

(1) आदिकाल (सन् 900 से 1500 ई० तक)
(2) मध्यकाल (सन् 1500 - 1800 ई० तक)
(3) आधुनिककाल (सन् 1800 - आज तक)

1. आदिकाल —

इस काल में पूर्व प्रचलित साहित्यिक अपभ्रंश ही साहित्य-लेखन के क्षेत्र में हावी रही। बोलचाल की भाषा पारंपरित परिनिष्ठित भाषा से अलग हो रही थी। इस काल की रचनाओं में बदलती हुई

भाषा के स्वरूप का स्पष्ट दर्शन होता है, जैसे—

मरुमरीचि (ब) न अरी दापनपडि, बिम्बु जइसा।
वातावेतो सो दिढ़ भइआ अपें पाथर जइसा॥
(भुसुकुपाद)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सिद्धों की भाषा को प्राकृताभास हिन्दी का प्राचीनतम रूप माना है। नाथ सम्प्रदाय से सम्बद्ध वाणियों में उनका रूप परवर्ती प्रतीत होता है। लोकभाषा में निरन्तर संस्कृत के तत्सम शब्दों की वृद्धि हो रही थी। शंकराचार्य के मत का संस्कृत भाषा में प्रसार होना भी सर्वसाधारण की भाषा में संस्कृत शब्दों के आगमन का एक कारण है। धीरे-धीरे लोकभाषा अपभ्रंश के द्वित्व व्यंजनों तथा उद्‌भव शब्दों से मुक्त और संस्कृत के तत्सम शब्दों से संयुक्त होती जा रही थी। जैसे—

(1) सोवता अवधू जीवता मुवा,
बोलता अवधू प्यजरै सुरवा॥
(गोरखनाथ)

(2) किसका बेटा किसकी बहू,
आप सवारथ मिलिया सहू॥
(चरपटनाथ)

कबीर और सन्तों की गृहीत सधुक्कड़ी या हिन्दवी इसी भाषा की अगली कड़ी है।

डिंगल-पिंगल—

अपभ्रंश भाषा की परवर्ती स्थितियाँ डिंगल तथा पिंगल के रूप में जानी जाती हैं। डिंगल भाषा का प्रयोग

चारण काव्यों में किया गया है। डिंगल से अधिक व्यापक क्षेत्र की साहित्यिक भाषा पिंगल कहलाती थी। जो सरस और कोमल तो थी ही शास्त्र सम्मत और व्यवस्थित भी थी। पिंगल की रचनाएँ वास्तव में ब्रजभाषा की ही रचनाएँ हैं।

अवहट्ठ —

आदिकाल में अपभ्रंश का एक उत्तरवर्ती रूप अवहट्ठ के रूप में उल्लिखित मिलता है। कुछ विद्वान अवहट्ठ को अपभ्रंश तथा आधुनिक आर्य भाषाओं के बीच की संक्रान्ति कालीन भाषा मानते हैं। संस्कृत अपभ्रंश शब्द से अवहट्ठ शब्द बनता है जिसका उल्लेख स्वयंभू ने स्वयं भूछन्द में अनेक बार किया है। भाषा के अर्थ में इसका प्रयोग अब्दुल रहमान ने 'संदेशरासक' में और विद्यापति ने 'कीर्तिलता' में किया है।

देसिल बयना सब जन मिट्ठा,
तें तैसन जम्पओ अवहट्ठा।
(विद्यापति)

खड़ी बोली अथवा हिन्दवी —

हिन्दी भाषा के आदिकाल में खड़ी बोली का प्रयोग भी मिलता है, जैसे अमीर खुसरो - जिन्होंने खड़ी-बोली के साफ-सुथरे रूप के साथ - साथ यत्र-तत्र ब्रजभाषा का भी प्रयोग किया है—

एक थाल मोती से भरा। सबके सिर पर औंधा ध
चारों ओर वह थाली फिरे। मोती उससे एक न गिरे
(खड़ी बोली

~~2. मध्यकाल~~ —

2. मध्यकाल —

मध्यकाल में अवधी और ब्रजभाषा साहित्यिक अभिव्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण भाषाये थी —

अवधी — बोलचाल की अवधी का प्रयोग जायसी, मंझन, कुतुबन, आलम, नूर मुहम्मद आदि सूफी कवियों ने किया लेकिन यह अवधी बोलचाल की थी। अवधी बोली के संस्कृतनिष्ठ, प्रांजल तथा व्यापक बनाने का श्रेय रामभक्त तुलसीदास को दिया जाता है।

ब्रजभाषा— इस काल तक ब्रज बोली इतनी विकसित हुई कि वह ब्रजभाषा बन गई। ब्रजक्षेत्र की सीमाओं को तोड़कर अन्य बोलियों के क्षेत्र में भी यह काव्य - भाषा के रूप में मान्य हो गयी। सूरदास ब्रजभाषा के अग्रणी कवि थे।

3. आधुनिककाल—

(खड़ी बोली का विकास

सन् 1757 ई० में प्लासी के युद्ध में सिराजुद्दौला की पराजय के पश्चात धीरे-धीरे भारत पर अंग्रेजो का प्रभुत्व बढ़ता गया। 1857 के प्रथम भारतीय स्वाधीनता संग्राम के पश्चात भारतवर्ष को ईस्ट

इण्डिया कम्पनी को समाप्त कर ब्रिटिश साम्राज्य का उपनिवेश बना लिया गया। सन् 1800 ई० में कलकत्ता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की गयी और हिन्दुस्तानी विभाग के प्राध्यापक के रूप में जान गिलक्राइस्ट की नियुक्ति की गयी।

सदल मिश्र ने नासिकेतोपाख्यान तथा अध्यात्म-रामायण का हिन्दी खड़ी बोली में अनुवाद किया। भारतेन्दु युग में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन तथा प्रचार से हिन्दी भाषा के विस्तृत और निश्चित स्वरूप की प्रतिष्ठा हुई। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट प्रताप नारायण मिश्र आदि लेखकों ने खड़ी बोली गद्य को व्यंग्यात्मकता से सजीव, संस्कृत निष्ठता से गम्भीर तथा सशक्त बनाया। द्विवेदी युग में गद्य और पद्य की भाषा का अन्तर मिट गया। भारतेन्दु युग की भाषा अनगढ़ शुष्क तथा अस्थिर थी किन्तु द्विवेदी जी के सतत प्रयास से सरस, मधुर, सुसंस्कृत और परिष्कृत होती गयी। 18 अप्रैल सन् 1900 में अंग्रेजी सरकार द्वारा नागरी को विशेष मान्यता प्रदान की गयी। लोकमान्य तिलक और महात्मा गाँधी ने हिन्दी को ही राष्ट्र के एकीकरण हेतु सर्वमान्य तथा अन्य सभी भाषाओं में बलशाली माना है।

=

8/4
25/04/2020

प्राचार्य
[illegible] मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
[illegible]पुर, ताखा, बलिया